IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पर्यावरण संरक्षण में छत्तीसगढ़ के गैर–सरकारी स्वैच्छिक ग्रामीण महिला सुरक्षा समूह की भूमिका

डॉ. सुधा यादव

डॉ. के.एन. दिने"ा , विभागाध्यक्ष, समाज"ाास्त्र विभाग, कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय भिलाई (छ.ग.)

भाोध सारां"ा

प्रस्तुत शोध पत्र पर्यावरण संरक्षण में छत्तीसगढ़ के गैर सरकारी स्वैच्छिक ग्रामीण महिला सुरक्षा समूह की भूमिका पर आधारित है। पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन की दि"ाा में केन्द्र एवं राज्य सरकार अनेक योजनाएं चला रही हैं। ग्रामीण महिला सुरक्षा समूह सरकार के इन योजनाओं के सफल क्रियान्वयन हेतु प्र"ाासन को सहयोग करती है। ग्रामीण महिला सुरक्षा समूह छत्तीसगढ़ में निजी स्वैच्छिक संस्था के रूप में कार्य कर रही एक महिला संस्था है, जिसने अपने विभिन्न उद्दे"यों को लेकर निरंतर कार्य किया है। पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में भी इस संस्था का उल्लेखनीय योगदान रहा है। अवैध वृक्ष कटाई में रोकथाम, पौधरोपण से लेकर उसके संरक्षण संवर्धन हेतु ये कार्य करती हैं। प्रस्तुत शोध में छत्तीसगढ़ राज्य के बालोद जिले के गुण्डरदेही तहसील के चार गांव सिकोसा, माहुद, खुटेरी व कोटगांव में उद्दे"यपूर्ण निद"ान पद्धति के द्वारा ग्रामीण महिला सुरक्षा समूह के 80 उत्तरदाताओं का चयन किया गया तथा तथ्यों के संकलन के लिए साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन का उपयोग किया गया है। चयनित उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों के वि"लेषण से स्पष्ट हुआ है कि लोग पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक हुए हैं जिसमे रैली निकालकर, वृक्षारोपण कर, पर्यावरण प्रदूषण के हानि बताकर पर्यावरण संरक्षण के कार्य किये हैं।

भाब्द :– पर्यावरण संरक्षण, स्वैच्छिक संगठन ,महिला सुरक्षा समूह।

प्रस्तावना :–

प्रस्तुत शोध पत्र में पर्यावरण संरक्षण में गैर सरकारी स्वैच्छिक ग्रामीण महिला सुरक्षा समूह की भूमिका का अध्ययन किया गया है। पर्यावरण संरक्षण की दि"ाा में हमारे भारत सरकार के साथ–साथ शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के अनेक सामाजिक संगठन, छोटे बड़े एन.जी.ओ., सामाजिक संस्थाएं, धार्मिक एवं आध्यात्मिक संस्थाएं और स्व सहायता समूह भी कार्यरत है इसी दि"ाा में बालोद जिले के

गुण्डरदेही तहसील के एक पंजीकृत गैर–सरकारी संस्था ग्रामीण महिला सूरक्षा समूह पर्यावरण संरक्षण के कार्य कर रही हैं। ग्रामीण महिला सुरक्षा समूह सामाजिक बुराइयों को खत्म कर अच्छाइयों को प्रोत्साहित करती है तथा शासन के जन कल्याणकारी योजनाओं को जन–जन तक पहुंचाने में सहयोग करती हैं जिससे लोगों को अधिक से अधिक लाभ प्राप्त हो सके। इन्ही में से एक योजना पर्यावरण संरक्षण का है जिसमें ग्रामीण महिला सुरक्षा समूह की महिलाएं पर्यावरण प्रदूषण से होने वाले नुकसान के बारे गांव में रैली निकालकर व छोटे–छोटे सभा द्वारा लोगों को जागरूक कर एवं स्वयं पर्यावरण संरक्षण के कार्य करके करती है। इसके लिए वे अवैध वृक्ष कटाई में रोकथम, वृक्षारोपण के लाभ बताकर व स्वयं वृक्षारोपण करके, धुआंरहित चूल्हे का उपयोग, गली मुहल्लों एवं जल स्त्रोत्रों की साफ–सफाई व सरकार द्वारा चलाये जा रहे प्लाास्टिक मुक्त अभियान एवं स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक करती है व स्वयं उक्त सभी कार्य करके लोगों को प्रेरित करती है।

पर्यावरण प्रदूषण संपूर्ण वि"व के लिए एक जटिल समस्या है। यह मनुष्य द्वारा किये गलतियों के परिणाम स्वरूप उत्पन्न हुआ है जो अब विकराल रूप धारण कर चुका है। इससे निपटने के लिए प्रत्येक नागरिक को जिम्मेदारी पूर्वक अपना उत्तरदायित्व निभाना होगा। महात्मा गांधी का पर्यावरण संबंधित एक महत्वपूर्ण कथन है कि हमारी धरती अपने सभी जीवों की आव"यकताओं की पूर्ति तो बखूबी कर सकती है, लेकिन उनकी लालच और हवस की पूर्ति कतई नहीं कर सकती।

स्थानीय ज्ञान और स्थानीय निर्णय लेने का सम्मान किया जाय तो पर्यावरण का उत्थान संभव है। टुवर्डस ग्रीन विलेज एक पर्यावरण सुधार रणनीति निर्धारित करता है जो जमीनी स्तर के वास्तविक जावन के अनुभव पर आधारित है।[1] भारत में महिलाएं वनो की कटाई के खिलाफ और जल संरक्षण के आंदोलनों में काफी हद तक दिखाई देती है। महिलाएं संरक्षण और बहाली की सक्रिय एजेंट है।[2] स्वर्गीय प्रधानमंत्री नेहरू और श्रीमती गांधी ने पर्यावरण के संरक्षण, संरक्षण और विकास के लिए अथक अभियान चलाया।[3] मानव और गैर मानव सहित जीवित तंत्र पर्यावरण के उचित संरक्षण के बिना जीवित नहीं रह सकता है। पर्यावरण संरक्षण गतिविधियां वि"व स्तर पर पर्यावरण और गैर सरकारी संगठनों, अन्तराष्ट्रीय संगठनों, राष्ट्र राज्यों द्वारा और राजनीतिक, धार्मिक क्षेत्र के विभिन्न संस्थानों की ओर से की जाती है।[4] पर्यावरण के संरक्षण गतिविधियो और प्रंबधन मे सक्रिय भागीदारी के कारण महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।[5]

अध्ययन के उद्दे"य :–

1. पर्यावरण संरक्षण में महिला सुरक्षा समूह के कार्य से समाज में हुए प्रभाव को ज्ञात करना।
2. ग्रामीण महिला सुरक्षा समूह द्वारा पर्यावरण संरक्षण हेतु किये गये कार्यों एवं योगदान को ज्ञात करना।

उपकल्पना :–

1. पर्यावरण संरक्षण के प्रति समाज में जागरूकता आई है।
2. ग्रामीण महिला सुरक्षा समूह द्वारा पर्यावरण संरक्षण के कार्य से पर्यावरण के क्षेत्र में सुधार हुआ है एवं स्वच्छता के प्रति जागरूकता आई है।

तथ्य संकलन एवं उपकरण प्रविधियां :–

प्रस्तुत शोध पत्र में छत्तीसगढ़ राज्य के बालोद जिले के गुण्डरदेही तहसील के चार गांव का चयन किया गया है। चयनित गांव है – सिकोसा, माहुद, खुटेरी व कोटगांव । गुण्डरदेही तहसील के इन चार गांव में 20–20 उत्तरदाताओं कुल 80 उत्तरदाताओं का चयन उद्दे"यपूर्ण निद"र्न पद्धति के आधार पर किया गया है। साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन प्रविधि के द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया है।

चयनित उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों का वि"लेषण निम्नानुसार प्रस्तुत है –

तालिका कमांक–1

उत्तरदाताओं की आयु

क.	आयु वर्शों में	आवृत्ति	प्रति"ात
1.	25 से 35	18	22.5
2.	36 से 45	35	43.7
3.	46 से 55	**15**	18.8
4.	56 से 65	12	15.0
	योग	80	100

तालिका कमांक–2

उत्तरदाताओं की ि"क्षा

क.	ि"क्षा	आवृत्ति	प्रति"ात
1.	प्राथमिक	14	17.5
2.	माध्यमिक	27	33.8
3.	उच्चतर माध्यमिक	06	7.5
4.	स्नातक	03	3.7
5.	स्नातकोत्तर	02	2.5
6.	साक्षर	10	12.5
7.	अि"क्षित	18	22.5
	योग	80	100

तालिका कमांक–3

पर्यावरण संरक्षण का लोगों पर प्रभाव

क.	प्रभाव	आवृत्ति	प्रति"ात
1.	पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता	56	70
2.	स्वयं एवं घर की स्वच्छता के प्रति जागरूकता	17	21.3
3.	आसपास की सफाई के प्रति जागरूकता	07	8.7
	योग	80	100

तालिका कमांक–4

पर्यावरण संरक्षण में ग्रामीण महिला सुरक्षा समूह का योगदान

क.	योगदान	आवृत्ति	प्रति"ात
1.	रैली निकालकर जागरूक करना	44	55
2.	स्वयं कार्य कर लोगो को प्रेरित करना	21	26.3
3	सरकारी योजनाओ मे सहयोग करके	15	18.7
	योग	80	100

तालिका कमांक–5

पर्यावरण संरक्षण में ग्रामीण महिला सुरक्षा समूह के कार्य

क.	कार्य	आवृत्ति	प्रति"ात
1.	वृक्षारोपण	40	50
2.	अवैध वृक्ष कटाई रोकने का प्रयास	11	13.7
3.	धुआंरहित चूल्हे का प्रोत्साहन	12	15
4.	पर्यावरण प्रदूषण के हानि बताकर	17	21.3
	योग	80	100

परिणाम एवं वि"लेशण :–

तालिका–1 में प्राप्त तथ्यो के वि"लेषण से स्पष्ट है कि चयनित महिला सुरक्षा समूह के कुल उत्तरदाताओं मे से सबसे अधिक आयु समूह वाले महिलाएँ 43.7% है जो कि 36 से 45 वर्ष के हैं 22.5% महिलाएं 25 से 35 वर्ष तथा 18.8% महिलाएं 46 से 55 वर्ष की हैं एवं सबसे कम 15% महिलाएं 56 से 65 वर्ष की हैं। इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण छत्तीसगढ़ में पर्यावरण संरक्षण में 36 से 45 वर्ष की महिलाओं का योगदान सर्वाधिक है।

तालिका–2 में उत्तरदाताओं की ि"ाक्षा सम्बन्धी तथ्यों के वि"लेषण से प्राप्त हुआ है कि चयनित कुल महिला उत्तरदाताओं में से अधिकां"ा उत्तरदाता माध्यमिक, प्राथमिक,उच्चतर माध्यमिक स्कूल ि"ाक्षा उत्तीर्ण है जो क्रम"ाः 33.8%, 17.5% तथा 7.5% है। स्नातक उत्तीर्ण उत्तरदाता केवल 3.7% व स्नातकोत्तर 2.5% और कुल उत्तरदाताओं में 12.5% साक्षर व अि"ाक्षित उत्तरदाता 22.5% है तथ्यों के वि"लेषण से स्पष्ट है कि महिला सुरक्षा समूह की महिलाओं की ि"ाक्षा की स्थिति सामान्य है।

तालिका–3 में प्राप्त तथ्यो के वि"लेषण से स्पष्ट है कि कुल चयनित उत्तरदाताओं में आधे 70% पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता आई है, 21.3% स्वयं एवं घर की स्वच्छता के प्रति जागरूकता आई है, व 8.7% लोगो ने बताया की आसपास की सफाई के प्रति जागरूकता आई है।

तालिका–4 में महिला सुरक्षा समूह के योगदान सम्बन्धी विवरण से स्पष्ट है कि चयनित उत्तरदाताओं में आधे से अधिक 55% रैली निकालकर , 26.3% स्वयं कार्य कर लोगो को प्रेरित करके व 18.7% सरकारी योजनाओ मे सहयोग करके अपना योगदान दे रही है।

तालिका–5 में स्पष्ट है कि कुल चयनित उत्तरदाताओं में आधें 50% पर्यावरण संरक्षण की दि"ाा मे वृक्षारोपण करक, 21.3% पर्यावरण प्रदूषण के हानि बताकर, 15% धुआंरहित चूल्हे का प्रोत्साहन करके व 13.7% अवैध वृक्ष कटाई रोकने का प्रयास कर के पर्यावरण संरक्षण की दि"ाा मे कार्य कर रही है।

उपकल्पना का परीक्षण–

H1 पर्यावरण संरक्षण के प्रति समाज में जागरूकता आई है।

तथ्यों के वि"लेषण से स्पष्ट है कि ग्रामीण महिलाओं द्वारा किये गये पर्यावरण संरक्षण के कार्य से समाज में जागरूकता आई है। अतः यह उपकल्पना स्वीकृत की गई।

H2 ग्रामीण महिला सुरक्षा समूह द्वारा पर्यावरण संरक्षण के कार्य से पर्यावरण के क्षेत्र में सुधार हुआ है एवं स्वच्छता के प्रति जागरूकता आई है।

तथ्यो के वि"लेषण से स्पष्ट है कि ग्रामीण महिला सुरक्षा समूह के द्वारा वृक्षारोपण कर, अवैध वृक्ष कटाई रोककर और पर्यावरण प्रदूषण से होने वाले हानि के बारे में बताकर लोगों को जागरूक किया। अतः यह उपकल्पना भी स्वीकृत की गई।

संदर्भ :–

1- Anil Agarwal (1992) Towords Green Villages A Strategy for Enivironmentally Sound and Participatory Rural Development in India, Environment and Urbanization 4 (1), Page no. – 53-64 .

2- JD Sonkhaskr (1992) A Role of Women Globally in Enironmental Protection .

3- Sundar Vadaon (2011) Role of NGO in Environmental Conservation and Development, Mother Earth Consultancy Services .

4- रीना जोसेफ (2016) पर्यावरण संरक्षण आंदोलन में महिलाओं की भागीदारीः केरल के वायनाड जिले में कैराली गांव का अध्ययन, सिक्किम वि"वविद्यालय।

5- Morufu Olalekan Raimi, Romoke Monsurat Suleiman, Oluwseun E Odipe, Salami John Toluope (2019) Women Role in Environmental Conservation and Development in Nigeria .